श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

द्वितीय वर्ष - अभ्यास - ४

सितंबर - २०२५

गुणांक - १००

प्रश्न - पत्र

सूचना : १. नाम और एनरोलमेंट नंबर बिना का पेपर रद्द किया जायेगा । २. लाल स्याही के पेन का उपयोग न करें । ३. समझ में न आये ऐसे अक्षरों वाले जवाब पत्र जांचे नहीं जायेंगे । ४. जवाब पत्र में ही योग्य खाने में जवाब लिखना है, साथ में दूसरा पेपर जोडना नहीं है, जोडने पर तीन मार्क्स काट लिये जायेंगे । ५. जवाब पत्र हर महिने की ता. २५ तक भेजना जरुरी है, आगे-पीछे आए पेपर जांचे नही जायेंगे । ६. सभी जवाब अभ्यासक्रम के आधार पर ही लिखना है । ७. जिस महिने का प्रश्न पत्र है, उसके बाद के महिने की २५ ता. को आपके मार्क्स तथा सही उत्तर इन्टरनेट पर दे दिये जायेंगें, उसके बाद आए हुये उत्तर पत्र स्वीकृत नहीं होंगे तथा फोन पर जवाब नहीं दिया जायेगा । ८. उत्तर पत्र में अभ्यासक्रम का नंबर लिखना जरुरी है ।

प्रश्न नं. १ रिक्त स्थान की पूर्ति करो - २०

१. ..... शुद्ध आत्मा सत्य से, तप से और ब्रह्मचर्य से प्राप्त की जा सकती है ।
२. चलते चलते नींद लेना ..... है ।
३. मेरा धर्म तो..... ने कहा है । उसमें कही भी क्षति हो ही नहीं सकती ।
४. शुभ अशुभ कर्म आने के मार्ग को..... तत्व कहते है ।
५. जहां ..... में चुके वहां सब कछ ही व्यर्थ है ।
६. उपद्रवो का..... और शांति करने वाले, सर्व भय को तैर गये हैं ऐसे शांतिनाथ भ. की स्तूति मैं मेरी शांति करने के लिये करना चाहता हुँ ।
७. सुपारी, नारियल आदि जो गिनकर बेचे जाते है, वो..... परिग्रह जानना ।
८. ..... वाला जीव तीसरे अथवा चोथे भव में मोक्ष जाता है ।
९. देवाधिदेव जिनेश्वर परमात्मा का दर्शन याने..... का प्रवेशद्वार है ।
१०. दूसरो की वासना भडके ऐसे..... श्राविकाओ को नहीं पहनना चाहिये ।
११. वायुभूति उम्र में भले दोनों बडे भाइयो से छोटे थे परंतु..... में वो दोनो से बडे थे ।
१२. विधवा या कुमारिका हो वो किसी की ग्रहण की हुई नहीं है, इसलिये उसे..... कहा जाता है ।
१३. जिनेश्वर परमात्मा का अनुयायी हो वही..... कहलाता है ।
१४. मंदिर के द्वार के आगे सोपान पर स्त्री ने..... पैर रखकर ही उपर चढना चाहिये ।
१५. हमारे देश के चोर लुटेरे व हत्यारे भी शील,सदाचार के महान रक्षक एवं..... थे ।
१६. ..... कर्म मदिरा पान समान है ।
१७. दूसरो को धर्म से प्रभावित करने के लिये एवं..... करने के लिये ऋद्धिवंत श्रावक ने आडंबर सहित मंदिर में दर्शन के लिये जाना चाहिये ।
१८. महाविदेह के उत्तर में रम्यकक्षेत्र ..... और ऐरावत क्षेत्र है ।
१९. छद्मस्थ जीवों को प्रथम..... होता है फिर ज्ञानोपयोग होता है ।
२०. ..... को व्यास के "पा" (१/४) भाग से गुणने से गोल वस्तु का क्षेत्रफल आता है । १५

प्रश्न नं. २ एक शब्द में जवाब लिखो -

१. जीव को सर्व प्रथम कौन से सम्यक्त्व की प्राप्ति होती है ?
२. शीलव्रत पालन के लिये कौन से भगवान की आराधना करुंगा ?
३. ज्यादा नींद लेने से भी कौनसे कर्म का बंध होता है ?
४. बाह्याभ्यंतर परिग्रह का त्याग करने में कौन समर्थ नहीं है ?
५. हस्तिनापुर नगर कौन से देश में आया है ?
६. सौधर्मेन्द्र की ऋद्धि को देखकर किस राजा का अभिमान उतर गया ?
७. अपनी शांति और प्रसन्नता को सुलगाने वाला कौन है ?
८. कौन सा सम्यक्त्व चौथेसे सातवें गुणस्थानक में होता है ?
९. वायुभूति का दीक्षा दिन कौन सा था ?
१०. जहाँ क्या सलामत वहाँ सब ही सलामत ?
११. दर्शनावरणीय कर्म किसके जैसा है ?
१२. श्रावक क्या बोलकर मंदिर में प्रवेश करता है ?
१३. संसार के प्रवाह के शत्रुरुप कौन से भगवान है ?
१४. मोहराजा का विश्रांतिस्थल क्या है ?
१५. कौन सी नींद वाला जीव प्रायः नरक में जाता है ? १०

प्रश्न नं. ३ नीचे दिये गये शब्दों के अर्थ लिखो -

१) वियड्ढ २) तओ ३) रह ४) गयदंता ५) महु ६) गय ७) विचित ८) खग्ग ९) मज्जं १०) वई ११) जलवय १३) भेअ

प्रश्न नं. ४ जोडियाँ लगाओ (सिर्फ 'B' के नंबर लिखो) - १०

A	B	A	B
१) मंगलमूर्ति	१) शीलव्रत	६) परिग्रह	६) तांबा, पितल, सीसा
२) अशाता	२) शुद्ध आचरण	७) चारित्र	७) मोहनिय कर्म
३) कुप्य	३) नवरत्न श्रद्धा	८) जिन दर्शन	८) प्रदक्षिणा
४) दुध	४) नवग्रह से बलवान	९) व्रताधिराज	९) मविय
५) विवेक से विकल	५) स्वर्ग का सोपान	१०) सम्यग्दर्शन	१०) नारक तिर्यंच

प्रश्न नं. ५ निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संख्या में लिखो - १०

१. श्री शांति चक्रवर्ती कितने गांव के स्वामी थे ?
२. महाविदेह क्षेत्र का प्रमाण कितना योजन है ?
३. आश्रवतत्व के कितने भेद है ?
४. जिनेश्वर प्रतिमाजी को प्रदक्षिणा देतां कितने उपवास का लाभ होता है ?
५. कितने कर्म के क्षय से क्षायिक सम्यकत्व की प्राप्ति होती है ?
६. धान्य कितने प्रकार के है ?
७. सौधर्मेन्द्र के अेक हाथी को कितने दंतशूल थे ?
८. परिग्रह के कितने प्रकार है ?
९. दर्शनावरणीय कर्म के भेद कितने ?
१०. जिन मंदिर के दर्शन करने मात्र से कितने उपवास का लाभ होता है ?

प्रश्न नं. ६ नीचे के वाक्य सही (✓) हैं या गलत (×) बताओ - १०

१. जैन विज्ञान अपूर्व-अद्‌भूत ज्ञान का खजाना है ।
२. घर में रखे हुअे थाली, वाटका, बर्तन, कलश वगैरह घर परिग्रह में आते है ।
३. आंख से कम दिखाई देना, चक्षु तेजहीन बनना इन सबमें चक्षुदर्शनावरणीय का उदय ही काम करता है ।
४. इन्द्रियों के भोगो को भोगते जीव सुख का अनुभव लेता है, परंतु इसके विरह और विपाक में भी सुख अनुभव करते है ।
५. कुशील ये असद्‌ध्यान का क्रिडावन है ।
६. वैसाख सुद ११ के दिन समवसरण में ही अपने ३५० शिष्यो के साथ ४२ वर्ष की उम्र में दीक्षा ले ली ।
७. मिथ्यात्त मोहनीय के जिन दलिकों की आधी शक्ति नष्ट हो चुकी है, उन अर्ध शुद्ध पुंज को मिश्र मोहनीय कहते है ।
८. क्षेत्र के नाम उस क्षेत्र के अधिष्ठायक देवों के नाम से रखे गये है ।
९. परायी संतान से स्नेह कर उसके विवाह के लिये जोडी आदि बनायी हो तो परविवाह करण नाम का अतिचार लगता ।
१०. निर्माल्य और स्नात्रजल एक स्थान पर डाले जिससे आशातना की संभावना रहे ।

प्रश्न नं. ७ नीचे के वाक्य किस पृष्ठ पर है वह पृष्ठ नंबर लिखो -

१. किसी का राहू का ग्रह सर्वनाश कर देता है ।
२. मनुष्य भव में भी रोग, शोक, गर्भवेदना, जन्म, मृत्यु आदि में अशाता है ।
३. मैं जीवन में दूसरी बार विवाह नहीं करुंगा ।
४. केवलज्ञान के अगाध सागर में से श्रुतज्ञान की गंगा प्रवाहित हुई ।
५. शांतिनाथ भगवान की स्तुति मैं मेरी शांति करने के लिये करता हूं ।
६. जीवन की तमाम भोग, उपभोग की सामग्री कल्पवृक्ष से प्राप्त होती हो वह क्षेत्र युगलिक क्षेत्र अथवा अकर्मभूमि कहलाता है ।
७. हम विजय सेठ एवं विजया सेठानी के संतान है ।
८. प्रदक्षिणा देते हुए समवशरण की तरह चार रुपों से वीतराग का चिंतन करना ।
९. पृथ्वीमाता ने उन्हें उत्तम ऐसे स्वाति नक्षत्र में जन्म दिया था ।
१०. सरलता से जाग जाय वह निद्रा कहलाती है ।

प्रश्न नं. ८ अपनी भाषा में समझाओ - १५

१. जिन,दर्शन, पूजा भक्ति के लाभ बताओ । २) परिग्रह परिमाण व्रत के अतिचार समझाओ । ३) दर्शनावरणीय कर्म समझाओ ।
४. कर्मभूमि और अकर्मभूमि समझाओ । ५) श्री शांतिनाथ भगवान की चक्रवर्ती की ऋद्धि का वर्णन करो ।

उत्तर पत्र नीचे लिखे पते पर भेजिए :
शत्रुंजय अेकेडमी श्री पद्मप्रभस्वामी जैन मंदिर, स्टेशन रोड, चालिसगाँव - ४२४१०१ जिल्हा : जलगांव,
मो. ९०२८२४२४८४. सही परिणाम और सही जवाब के लिये वेब साईट www.shatrunjayacademy.com